रात्रिक्लास 13.4.68 ओमशान्ति ''बाप और वर्सा याद है?''

बाप कहने से यह तो दिल में आ जाता है कि स्वर्ग के मालिक बनें। बाबा को याद करने से खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए। सारा चक्र भी याद आ जाना चाहिए। हम वर्सा पाने के हकदार हैं। यह चित्र है सबसे अच्छा। लिखना है यह गॉड फादरली वर्थ राइट है सो भी अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर। पुरुषोत्तम संगम का अर्थ भी समझते नहीं। पुरुषोत्तम माना कलयुग के अंत सतयुग आदि का यह संगमयुग। यह तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध आधिकार है। जो विनाश के पहले पा सकते हो। बाबा बोला ..... स्वर्ग का मालिक। बाबा तो स्वर्ग ही स्थापन करते हैं। तुम यहां बैठे हो जैसे कि स्वर्ग में बैठे हो। अगर बाप को याद करते हो तो; परन्तु याद करते नहीं। बच्चों को नशा नहीं चढ़ता। गायन है घर के गंगा को नहीं मानते। वह खुशी नहीं है। बाप स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं। ऐसे सहज बात भी समझने का अक्ल नहीं। गोया बुद्धि चेंज नहीं हुई है। बाप जानते हैं यह बच्चे स्वर्ग का श्रृंगार करते हैं। लक्की सितारे हैं। वह आसमान के तुम सच्चे–2 इस भारत भूमि के सितारे हो। ज्योत तो सभी के जग जाती है। बच्चे सर्विस करते हैं तो खुशी होती हैं। यहां भी बच्चे प्रदर्शनी के लिए प्रबन्ध रच रहे हैं। पहले–2 इनकी महिमा लिखनी चाहिए। भारतवासी का यह जन्मसिद्ध अधिकार है। इस लड़ाई से पहले पा सकते हैं। बाबा आगे बहुत कहा है; परन्तु ध्यान में नहीं आता है कोई के। अभी ध्यान (में) बच्चों को आया है जो देखने से ही आ जाये। समझाने वाले भी ऐसे हों। यह वर्सा है। भारत की गवर्मेन्ट भी यह चाहती है कि विश्व में शान्ति हो। यह विश्व में शान्ति का राज्य था ना। कोई जानते ही नहीं। तुम उन्हों की बुद्धि में बिठावेंगे। बहुत आवेंगे, उन्हों का कल्याण होगा। तुरन्त दान..... देरी नहीं करनी चाहिए। सर्विस का जिसको खयाल होता है बाबा उनको बहुत पसंद करते हैं। महारथी राइट हैण्ड वह हैं। बहुतो को नॉलेज मिलेगी। समझेंगे यह तो बड़ी अच्छी संस्था है। नहीं तो आबू में कोई दो/चार ऐसे हैं जो ..... को कहते हैं यहां ब्रह्मा कुमारियों पास जावेंगे तो वह घेटा बना देंगी। मनुष्य डरपोक तो है ना। ..... और अहमदाबाद वालों का यह हिल स्टेशन है। बहुत आते हैं तो अन्दर में होता है बहुतों को रास्ता बतावें। बड़ी खुशी की बात है। तुम किसके बच्चे हो? बेहद के बाप दादा के। हम जानते हैं हम विश्व के मालिक बन रहे हैं तो कितनी खुशी होनी चाहिए। याद की यात्रा कितनी सहज है। बाप तो रात–दिन याद आना चाहिए। सिर्फ़ एक वा दो घंटा क्यों? ऐसे बाप को तो रात को भी जाग कर याद करना चाहिए। याद भी करना है एक को। बहुत आते हैं पूरा निश्चय नहीं तो कहेंगे जगदम्बा का दीदार करें। समझो कि अभी निश्चय नहीं है। कितने मेले आदि लगते हैं। भक्तिमार्ग माना ही दुर्गतिमार्ग। जाते हैं अपने दुर्गति करने लिए। ज्ञान स्नान करना होता है या पानी में स्नान करना होता है जहां गटरा का पानी जाता रहता है। अभी भूलो मत। सर्विस का बहुत ही ओना रखना है। ज्ञान का सागर तो बाप ही है। वह आकर सृष्टि का सारा समाचार सुनाते हैं। बाप कहते हैं आगे तुम ही जाने थे। अनपढ़ तुच्छ बुद्धि थे ना। अभी तुम कितना ऊँच (पद) पाते हो। हर एक को पैगाम देना है। बाप आया हुआ है बैज तुम सौगात दे सकते हो। बनाने वाले को लाख दो बनाना चाहिए। पर्चे भी बहुत अच्छे हैं। बांटो। एकज भूल है जिस कारण ही पतित बन पड़े हो। कोई भी टाइम मिले तो यह पर्चे उठाकर जाओ समझ(ा) बोलो यह पदमों का ख़जाना है। इनको अच्छी रीत पढ़ना। पाई भी खर्चा नहीं है। बिगर कौड़ी खर्चे विश्व का मालिक। सर्विस तो बहुत ही है। बाबा कहते हैं सभी भाषाओं में यह छपा सकते हैं। बाप कहेंगे सभी भाषाओं में इतने लाख छपा कर भेज दो। है तो सभी बाप के घर ना। शुभ कार्य में देरी नहीं। बनारस में बहुत खूब (बांट) सकते हो। तुम केस तो कर नहीं सकते हो। कण–2 में परमात्मा कह देते हैं। (इत)नी गाली। लड़ना चाहिए अच्छी रीत। ऐसा वकील बैरिस्टर हाथ में आवे। अजन वह नशा चढ़ा नहीं। तुम बहुत केस कर सकते हो। 20 केस....दो यह भारत की ग्लानी है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते नमस्ते।